International Journal of Advanced Research and Development
ISSN: 2455-4030
Impact Factor: RJIF 5.24
www.advancedjournal.com
Volume 3; Issue 1; January 2018; Page No. 799-800

मिथक अवधारणा स्वरूप और विकास

डॉ0 सीमा जैन
Sr. Lecturer, Govt. HSS V-Afzalpur, D-Mandsaur, Madhya Pardesh, India

सारांश
मिथक की व्युत्पत्ति अनेक प्रकार से मानी गई है। जिनमें मिथ, माइथॉस या मिथस् को आधार माना गया है। विभिन्न विद्वानों ने मिथक की विभिन्न परिभाषाएँ दी है। वस्तुतः मिथक पुरातन को नवीन परिप्रेक्ष्य में रखते हुए सत्य की प्रतिष्ठा करता है। मिथक के अनेक प्रकार प्राकृतिक, ऋतु परिवर्तन संबंधी, देवत्व संबंधी, प्राणीजन्य संबंधी इत्यादि माने गए है। मिथक दंतकथाओं, लोककथाओं और इतिहास आदि से संबंध रखते हुए भी भिन्न होता है। यह प्रतीकों पर आश्रित होता है किन्तु स्वयं प्रतीक नहीं होता है। मिथक की साहित्य एवं समाज में अत्यन्त उपयोगिता है। लेखक युगीन समस्याओं को और अनेक जीवन प्रसंगों को इसके माध्यम से चित्रित करता है।

मूल शब्द : मिथक, प्राकृतिक, ऋतु परिवर्तन संबंधी, देवत्व संबंधी, प्राणीजन्य।

प्रस्तावना
मिथक अंग्रेजी भाषा के Myth का समानार्थी समझा जाता रहा है जिसकी व्युत्पत्ति वास्तव में यूनानी भाषा के माइथॉस (Mythos) शब्द से मानी जाती है जिसका तात्पर्य है ''आप्त वचन'' या अतर्क्य कथन। वस्तुतः मिथक ऐसे कथनों को कहा जा सकता है जिन पर न तो अविश्वास या विश्वास जैसी व्याख्याएं की जा सके और न ही तर्क द्वारा सिद्ध किया जा सके। माइथॉस शब्द सर्वप्रथम यूनानी संस्कृति की प्रागैतिहासिक कथाओं के लिये प्रयोग किया गया था।
मिथक एक पुनर्सृजित शब्द है, जिसे अंग्रेजी भाषा के मिथ के साथ हिन्दी भाषा के 'क' प्रत्यय को जोड़कर बनाया गया है अतः उत्पत्ति के आधार पर इसे संकर शब्द माना जाना चाहिये।
मिथक शब्द की सिद्धि संस्कृत व्याकरण से भी नही होती, यदि मिथक को मिथस् से व्युत्पन्न माना जाए तो अर्थ हो जाता है सत्य एवं कल्पना का अभिन्न संबंध जबकि मिथ्या से इसका अर्थ है कपोल कथा।
वास्तव में इन दोनों शब्दों में ध्वन्यात्मक संबंध है। पोइटिक्स में अरस्तू ने मिथ शब्द को कथानक कथाबन्ध या कल्पकथा के रूप में प्रयोग किया है। सभी व्याख्याओं का विस्तृत विश्लेषण करने पर कहा जा सकता है कि ''मानव जीवन के अनुभव से परे किसी काल की असाधारण घटनाओं एवं परिस्थितियों से संबद्ध आख्यान मिथक कहे जा सकते हैं।''
यद्यपि मिथकों का अस्तित्व हमारे देश में और अन्य कईं देशों में अनन्त काल से कई सामाजिक क्षेत्रों में चला आ रहा है तथापि साहित्य के क्षेत्र में इसका प्रयोग आधुनिक काल में प्रारंभ हुआ यह शब्द हिन्दी साहित्य में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी जी की देन माना जा सकता है। आचार्य श्री ने इसे सांस्कृतिक धरोहर के रूप में देखने का प्रयत्न किया और इसकी महत्ता स्थापित की। अनन्त काल से मानव संस्कृति अनेक माध्यमों से स्वयं को अभिव्यक्त करती आयी है मिथक इसका प्राचीनतम माध्यम है। सभ्यता के विकास के साथ–साथ मानवीय जीवन की बढ़ती जटिलताओं को संप्रेषित करने के लिये मिथक रूपी माध्यम चुना गया।
मिथक जीवन की अनुभूतियों को कल्पना के साये में आहरित करने वाला तत्व है। ये प्राचीन मनुष्य के सृजन विज्ञान के वे सूत्र है जिनसे एक और हम आदिमानव की दुनिया के बारे में जान सकते हैं तो दूसरी और अपने रचनागतविकास में अतीत की इस सम्पदा को एक प्रेरणा के रूप में पाते हैं।
हिन्दी साहित्य में मिथक के लिये अनेक शब्दों का प्रयोग किया जाता रहा है जिसमें पुरावृत, पुराकथा, पुराख्यान, पुराण, पुराणकथा, सृष्टिकथा, कल्पकथा धर्मगाथा आदि किन्तु ये सभी शब्द 'मिथक' शब्द की पूर्ण व्याख्या नही करते। वस्तुतः ये मिथक के विविध पक्षों के वाचक है अतः मिथक न तो पुराकथा है न पुराण, न सृष्टिकथा है न पुराख्यान और न कल्पकथा है न धर्मगाथा। इन्हें मिथक के अर्थ में बांधना उचित नहीं जान पड़ता। इसके साथ कथा शब्द का प्रयोग भ्रम ही पैदा करता है और समाज स्वीकृत अर्थ से भिन्न होता है।
वास्तव में मिथक रचनाकार की कल्पना का वह मूर्त रूप है जो इसके व्यापक क्षेत्र को व्यक्त करने के लिये अतीत के उपकरण के रूप में प्रयुक्त हुआ हो जिसके लिये पुराकथा का आधार लिया गया हो। यह मनुष्य की आस्थाओं, भावनाओं और विश्वासों का ऐसा संयोजन है जो इतिहास के प्रवाह में धीरे–धीरे रूप ग्रहण करता हुआ मानव समाज की चेतना को प्रभावित करता है। यही कारण है कि आज मिथक को प्राचीन कथा की प्रस्तुति–प्रतीक, बिम्ब और रूपक के द्वारा करते हुए सत्य अनुभव और विश्वास की अभिव्यक्ति का माध्यम माना जाता हैं। 'मिथक' इसीलिये यूटोपिया न होकर सत्य की जड़ों तक पहुँचने का नैतिक उपक्रम है।
साहित्य में, विशेषकर काव्य में मिथक का प्रयोग पश्चिम से प्रभावित है। मिथकों के स्वरूप को समझने के लिये समस्त विद्वानों के दृष्टिकोणों का अपना महत्व है।
अन्सर्ट कैसिरर के अनुसार ''मिथक तर्कणा शक्ति के आविर्भाव के पूर्ववर्ती मानव–अनुभवों का अभिलेख है। फ्रेजर ने कहा है– मिथक कोई वाष्पमय, अमूर्त या अवास्तविक कल्पना नहीं है अपितु सत्य का प्रज्ज्वलित रूप है। नीत्शे ने इसे ''सार्वभौम भावना और सत्य का विलक्षण रूप'' कहा है वहीं फिलीप व्हीलराबट ने इसे ''मानव के समग्र अनुभवों की अभिव्यक्ति'' कहा है। मनोवैज्ञानिकों के अनुसार यह ''आदिम मनुष्य के अनुभव का आद्यबिम्ब है''।भाषा वैज्ञानिक मैक्समूलर मिथक को भाषा का रोग कहते हैं।

विकास

वास्तव में मिथक व पुराख्यान उस अनादि मनुष्य के वे सारे अनुभव है जिसमें उसका इतिहास संस्कृति, परम्परा, जीवन प्रक्रियाआदि समाहित है। ये वे उदाहरण और कथाएं हैं जिनकी प्रासंगिकता आज भी बनी हुई। मिथकों की रचना उस समय हुई जब मानव एवं प्रकृति के बीच विभाजक रेखाऍं स्पष्ट नहीं थी दोनों सार्वभौम जीवन के सहभागी थे और परस्पर सहयोग एवं संघर्ष के सूत्रों से बंधे हुए थे। प्राकृतिक शक्तियों के प्रति भावात्मक प्रतिक्रियाओं को व्यक्त करने के प्रयास में मिथकों का जन्म हुआ। मिथकीय कथाऍं उतनी ही प्राचीन है जितनी स्वयं मानव जाति।

प्रकार

मिथक संपूर्ण मानवों के समग्र अनुभवों की अभिव्यक्ति है। मिथकों के विषय व्यापक है। इनसाइक्लोपीडिया रिलीजन एण्ड एथिक्स में श्री ए.जी. गार्डनर ने मिथकों को बारह भागों में विभाजित किया है। जिनमें ऋतु परिवर्तन, प्राकृतिक, सृष्टिजन्म, देवत्व, प्राणिजन्म, जीव का आवागमन, वीर नायक, सामाजिक क्रिया–कलाप, आत्मा, दानव एवं ऐतिहासिक आदि शामिल है।

विशेषता

मिथक रचना मानव चेतना की मूल प्रवृत्ति है। मिथकों की निम्न कईं विशेषताऍं है यथा –

1. ये परम्परागत आख्यान है जिनके प्रणेता अज्ञात होते हैं।
2. ये अलौकिक एवं अतिमानवीय जीवन से संबद्ध होते हैं किन्तु मानव जीवन के लिये प्रासंगिक होते हैं।
3. इनका रूप कथात्मक होता है।
4. इनकी जड़े समाज या सामूहिकता में होती है।
5. इनमें जादू या चमत्कार निहित होते हैं।
6. ये लचीले एवं परिवर्तनशील होते हैं।
7. इनमें अद्वैत की भावभूमि पाइ जाती है।
8. ये कालातीत होते हैं और संचरणशीलता गत्यात्मक स्वरूप इनकी जीवन्तता की कसौटी है।
9. प्रतिकात्मकता का अस्तित्व पाया जाता है एवं मिथक कालातीत होते हैं।

अन्य समानधर्मा कथा रूप

मिथक के समानधर्मा कथा रूपों में सबसे प्रमुख दन्तकथा है। लोकथाओं से भी मिथक की पर्याप्त समरूपता दिखाई देती है। वहीं मिथक और प्रतीकों में भी घनिष्ठ संबंध परिलक्षित होता है काव्य में प्रयुक्त प्रतीक मिथक की शक्ति होते हैं। मिथक अनेक आद्य प्रतीकों का गुच्छ होता है। इसी प्रकार मिथक मनुष्य की जीवनयात्रा के सहचर है और इसे जानने का साधन इतिहास भी है जब हम इतिहास से दूर चले आते हैं तो ऐतिहासिक घटनाऍं कईं बार मिथकों में रूपांतरित हो जाती है।

उपयोगिता

मिथक आज की कविता तथा आलोचना का अत्यन्त प्रिय व महत्वपूर्ण विषय बन गया है। मिथक प्रयोगधर्मी मानवीय मूल भावनाओं को प्रतिबिम्बित करने में सक्षम है। अपने युग की समस्या, किसी सनातन प्रश्न को युग के संदर्भ में साकार करने के लिये रचनाकार पुराणकथा का आश्रय ग्रहण करता है। पुराकथाएं मनुष्य के बहुत ही निकटतम रहस्य है जो साधन के रूप में प्रयुक्त किये जाते रहे हैं। यथा शम्बूक वध का प्रसंग लेकर वर्णभेद पर तीखे प्रहार हुए है और हो सकते हैं। वहीं सीता त्याग के आधार पर स्त्री–पुरूष संबंध तथा समाज में स्त्री की स्थिति तथा सतीत्व आदि प्रश्नों पर अपने मत प्रस्तुत करने के अच्छे अवकाश है। इस प्रकार अन्य अनेक प्रसंग है जो कुप्रथाओं तथा समयातीत मान्यताओं पर प्रहार करने के लिये सुविधाजनक मंच प्रस्तुत करते हैं। प्रख्यात कथाओं में मौलिकता के लिये स्थान नहीं रहता परन्तु आज का रचनाकार रचना–प्रक्रिया के लिये मिथकों का आधार लेकर अपनी कल्पना शक्ति के द्वारा पुराने फ्रेम में नवीन रंग भर कर मौलिकता के आयाम सायास बनाए रखने में समर्थ है। स्पष्ट है कि हमें यह कहने में कोई असत्यता तो नहीं दिखाई देती है कि ''रचनाओं में मिथकों की उपयोगिता को कतई नकारा नहीं जा सकता।''

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. डॉ. शम्भूनाथ मिथक और भाषा – पृ. 56
2. डॉ. नगेन्द्र, मिथक और साहित्य – पृ. 7, पृ. 3, पृ. 6, पृ. 16
3. रामअवध द्विवेदी, साहित्य सिद्धान्त – पृ. 12
4. डॉ. जगदीश प्रसाद श्रीवास्तव, मिथकीय कल्पना और आधुनिक काव्य –पृ. 6
5. डॉ. विजयेन्द्र स्नातक, विमर्श के क्षण, पृ. 16
6. डॉ. वीरेन्द्रसिंह, मिथक दर्शन का विकास पृ. 13
7. ब्रिटानिका विश्व कोश, भाग – 15 पृ. 1133